आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711 पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 3 अंक : 9 बीकानेर, मई, 2016 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से.....

पशुपालन के क्षेत्र में भविष्य की चुनौतियों से निपटने की तैयारी

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाईयों –बहनों!

समय के साथ–साथ निंरतर बदलाव के लिए हमें तैयार रहना चाहिए। कृषि और पशुपालन जैसे व्यवसाय भी इससे अछूते नहीं हैं। जलवायु में परिवर्तन, नवीन ज्ञान और तकनीक का प्रसार, नए अनुसंधान उपकरण और संसाधनों के विकास के मद्देनजर हमें भी अपने आपको ढालना होगा। पशुपालन के क्षेत्र में भविष्य की मांग और संभावित चुनौतियों से निपटने के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय ने एक तकनीक दूरदृष्टि टीम का गठन किया है। यह वैज्ञानिक टीम भविष्य में पशुधन उत्पादों की मांग और तकनीकी जरूरतों का आंकलन करेगी। पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए भविष्य में मानव संसाधनों तथा संस्थानिक संस्थाओं की आवश्यकताओं और तकनीक क्षमताओं का आंकलन कर उनसे निपटने के तौर–तरीकों के लिए अपने सुझाव भी प्रस्तुत करेगी। इस टीम के संस्थानिक जरूरतों और समिति के सुझावों और आंकलन के आधार पर निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकेगा और विश्वविद्यालय पूर्व तैयारी के साथ सही दिशा की ओर तकनीकी सृजन के कार्यों को कर सकेगा। इससे आने वाले समय में पशुधन से प्राप्त भोजन सामग्री यथा दूध, अण्डा इत्यादि तथा पशुपालन में वृद्धि दर को टिकाऊ बनाया जा सकेगा। हाल ही में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने राजुवास को इस बाबत कदम उठाने को कहा गया है। राजुवास द्वारा इस टीम के गठन से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा निकट भविष्य में गठित किए जाने वाले कृषि तकनीकी दूरदर्शी केन्द्रों (ए.एफ.टी.सी.) के गठन किए जाने का मार्ग प्रशस्त होगा। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की योजना है कि राजुवास में इस प्रकार का केन्द्र बनाया जाए जिसकी समस्त प्रकार की वित्तीय सहायता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रदान की जाएगी। इस टीम के गठन से राज्य में पशुपालन विकास, मानव संसाधन तथा आधारभूत संरचनाओं को भविष्य की चुनौतियों के लिए सुदृढ़ करने में सहायता मिल सकेगी।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय पशुपालक सम्मान समारोह में विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र पशुपालक नये आयाम के अप्रेल अंक का विमोचन करते हुए माननीय कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी व अन्य अतिथिगण

मुख्य समाचार

सरदारशहर किसान मेले में वी.यू.टी.आर.सी. चूरू की प्रदर्शनी स्टॉल को मिला प्रथम पुरस्कार

कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर द्वारा 4 अप्रेल 2016 को सरदारशहर में एक दिवसीय किसान मेले का आयोजन किया गया। "प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना" विषय पर आयोजित इस मेले में वेटरनरी

विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू की प्रदर्शनी स्टॉल को सर्वश्रेष्ठ पाए जाने पर प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। चूरू के जिला प्रमुख श्री हरलाल सिंह ने वी.यू.टी.आर.सी. चूरू के डॉ. राजेश सिंगाठिया व डॉ. सुनील तमोली को प्रथम पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के चूरू केन्द्र द्वारा प्रदर्शनी स्टॉल मे पशुपालन की नई चिकित्सा तकनीकों और पशुपालन से सम्बद्ध जानकारी चार्ट और फ्लेक्स के माध्यम से उपलब्ध करवाई। इस अवसर पर पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. राजेन्द्र तमोली, आत्मा के परियोजना निदेशक डॉ. गढ़वाल, कृषि विज्ञान केन्द्र के डॉ. वी.के.सैनी मौजूद थे।

संगरिया में कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर की प्रदर्शनी स्टॉल को मिला द्वितीय पुरस्कार

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अन्तर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया द्वारा 5 अप्रेल, 2016 को आयोजित किसान मेले में कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर की प्रदर्शनी स्टॉल को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। मेले में विभिन्न प्रकार की स्टॉलों की प्रदर्शनी लगायी गयी जिसमें कृषि आदान, कृषि उपकरण, किसानों की कल्याणकारी योजनाओं की कुल 87 स्टॉलें लगायी गयी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय राज्य मंत्री निहालचन्द मेघवाल थे। कृषि विज्ञान केन्द्र की प्रदर्शनी स्टॉल में पशुपालन के क्षेत्र में नवीनतम तकनीक और राज्य के पशुधन की समृद्धि के लिये किये जा रहे कार्यो को चार्ट के माध्यम से प्रदर्शित किया गया जिसे सैकड़ो किसानों तथा पशुपालकों ने सराहा।

सेन्टर फॉर माइक्रोफाइनेन्स की बकरी आधारित आजीविका कार्यक्रम का मूल्यांकन करेगा–राजुवास

पश्चिमी राजस्थान में बकरी पालन से पशुपालकों के आर्थिक उन्नयन के लिए सेन्टर फॉर माइक्रोफाइनेन्स की 291 करोड़ रूपये लागत की परियोजना के मूल्यांकन का कार्य वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा। राजस्थान सरकार द्वारा इन्टरनेशनल फंड फॉर एग्रीकल्चर डवलपमेन्ट और टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से चलाई जा रही इस परियोजना का क्रियान्वन सेन्टर फॉर माइक्रोफाइनेन्स (एन.जी.ओ.) द्वारा जोधपुर संभाग के 6 अत्यंत पिछड़े विकास खंडों में किया जा रहा है। कार्यशाला में वेटरनरी विश्वविद्यालय के डीन, डायरेक्टर, वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के प्रभारीगण और परियोजना क्रियान्वयन की एजेन्सी सेन्टर ऑफ माइक्रोफाइनेन्स के अधिकारियों ने भाग लिया। इस परियोजना के तहत 6 विकास खंडों (पंचायत समिति) बाप, बायतू, सांकड़ा, सांचौर, बाली और आबू रोड़ शामिल हैं। परियोजना के तहत करीब 1 हजार गांवों के एक लाख आर्थिक न्यून स्तर वाले परिवारों को शामिल करके बकरी आधारित आजीविका कार्यक्रम चलाया जा रहा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत की अध्यक्षता में परियोजना के प्रभावी मूल्यांकन के लिए 13 अप्रेल, 2016 को कुलपति सचिवालय के सभागार में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत ने प्रतिष्ठित स्वयंसेवी संगठन "टाटा ट्रस्ट" द्वारा राज्य के महत्वाकांक्षी परियोजना के क्रियान्वयन कार्यों का वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा मूल्यांकन कार्य को अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए गौरव की बात होना बताया। साउथ एशिया प्रो–पूअर लाईवस्टॉक पॉलिसी प्रोग्राम की टीम लीडर वर्षा मेहता, वेटरनरी विश्वविद्यालय के विशेषाधिकारी डॉ. उमेश अग्रवाल, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया, अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा, निदेशक क्लिनिक्स प्रो. अनिल आहुजा, अधिष्ठाता स्नातकोत्तर शिक्षा प्रो. जी.एस. मनोहर एवं निदेशक पी.एम.ई. प्रो. ए.पी. सिंह सहित वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों व सदस्यों ने कार्यशाला में भाग लिया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

चूरू में पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 7, 20, 28 एवं 29 अप्रेल को गांव दूधवा मीठा, रूपलीसर, गिनडी एवं हडीयाल गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 95 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, सूरतगढ़ द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ (गंगानगर) द्वारा 6 एवं 12 अप्रेल को केन्द्र परिसर में तथा 26 अप्रेल को गांव स्वरूपदेसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 35 पशुपालकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 11 एव 16 अप्रेल को गांव रामपुरा एवं बालदा विंलागडी में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 51 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नूं द्वारा 22, 23 एवं 25 अप्रेल को गांव नवरंगपुरा, दुजार, भामासी में तथा 28 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 101 पशुपालकों ने भाग लिया।

डूंगरपुर में 60 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 22 एवं 23 अप्रेल को गांव खजूरिया एवं नलवा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 24 महिला पशुपालकों सहित 60 कृषकों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा 102 पशुपालक लाभान्वित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 21, 23, 26 एवं 29 अप्रेल को गांव पेलारा, खखावली, सहारई एवं श्योरावली में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 102 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर में पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 5 अप्रेल को गांव बडली में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 25 पशुपालकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 26 एवं 29 अप्रेल 2016 को चिरोंज एवं लहन में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 49 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा में 131 पशुपालक लाभान्वित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 6, 11, 23 एवं 26 अप्रेल को गांव अभयपुरा, ढाणी, मवासा एवं कुराड गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 131 पशुपालकों ने भाग लिया।

अपने स्वदेशी गौवंश को पहचानें — नागौरी बैल –गौरव प्रदेश का

नागौरी गौवंश के बैल खेती के लिये हल जोतने तथा बैलगाड़ी से भार ढोने में भारत की सर्वश्रेष्ठ नस्ल है। दलदली जमीन में हल जोतने के लिये विशेषकर चावल तथा कम जोत की खेती के लिये किसानों की पहली पसंद नागोरी बैल हैं। तीव्र सड़क परिवहन कार्य के लिए इसके बैल सबसे उत्तम है। जोधपुर जिले से लगते अन्य जिलों–नागौर, बाड़मेर में नागौरी नस्ल बैल बहुतायत में मिलते हैं। इस नस्ल का कांकरेज और हरियाणा से विकसित होने का आंकलन किया जाता है। नागौरी गाय एक दुग्ध काल में अधिकतम 900 किग्रा तक दूध देती है।

इस नस्ल के पशु बड़े आकार के पालतु सीधे तथा ऊर्जावान (सक्रिय) होते हैं। ये पशु सफेद या हल्के धूसर रंग के होते हैं आकार में लम्बे चौड़े होते है, तथा दिखने में मजबूत तथा ताकतवर लगते हैं। इनकी कमर सीधी होती है, सीना चौड़ा होता है, पुट्ठे मजबूत होते हैं तथा बैलों के पैर मजबूत तथा मांसल होते हैं। इनकी खोपड़ी लम्बी तथा आंखों के बीच चपटी होती है। इनकी चमड़ी मुलायम तथा गर्दन के प्रतिपृष्ठ भाग व मूत्र नलिका के उपर चमडी नाम मात्र की ही होती है इसलिये इसकी मूत्र नलिका के उपर की चमड़ी को बटन सीथ कहते हैं। थुम्बी काफी बड़ी होती है। पूंछ छोटी होती है तथा पूंछ के अंत में काले बालों का गुच्छा होता है। सींग सिर के उपरी कोनों से निकलते हैं तथा मध्यम आकार के होते हैं। गायें लगभग 1 लीटर दूध देती है जो बछड़ों के लिये मुश्किल से पूरा होता है। ये पशु नागौर तथा पुष्कर के पशु मेलों में बहुतायत से मिल जाते हैं। अच्छे बैलों की जोडी पशु मेलों में अधिकतम दो लाख रूपये में बिकती है। उत्तर प्रदेश व बिहार के किसानों द्वारा खेती के लिए नागौरी बैलों की खरीद बहुतायत में की जाती है। यद्यपि खेतों में ट्रेक्टर का प्रचलन बढ़ जाने से इसकी उपयोगिता में कमी आई है लेकिन छोटी जोत के कारण मझौले कृषकों द्वारा इसका उपयोग आज भी किया जाता है तथा इसका महत्व कम नहीं हुआ है।

गर्मियों में अधिक दुग्ध उत्पादन हेतु गाय व भैंसों की प्रबन्ध व्यवस्था

अक्सर पशुपालकों की शिकायत रहती है कि पूरी खुराक देने पर भी उन्हें अपने पशुओं से पूरा फायदा नहीं मिलता। लेकिन पशुपालक भाई भूल जाते हैं कि प्रायः गर्मियों के मौसम में वातावरण का तापमान अधिक होने के कारण सामान्यतः पशु हीट स्ट्रेस में चले जाते हैं क्योंकि शरीर में पानी व खनिज लवणों की कमी हो जाती है जिसकी वजह से पशुओं कि उत्पादन क्षमता में कमी और पशुओं में रोगों से लड़ने की क्षमता (रोग प्रतिरोधक क्षमता) कम हो जाती है और पशु बहुत सारी बीमारियों का शिकार होकर मर भी जाता है।

गाय व भैंसों की देखरेख :-

सामान्यतया मनुष्यों की तरह पशुओं को भी आपका प्यार तथा अच्छा व्यवहार जरूरी होता है विशेषतया दूध देने वाली गाय अच्छा व्यवहार करने पर दूध ज्यादा देती है। अगर आप चाहते हैं कि अपने पशुओं से पूरा लाभ प्राप्त हो तथा स्वस्थ व साफ (आकर्षक) दिखें तो हमें अपने पशुओं की गर्मियों के दिनों में देखभाल अवश्य करें।

गाय तो सारे साल ब्याती रहती है तथा इनके ब्याने का कोई विशेष समय नहीं होता है। लेकिन इसके विपरीत भैंसें वर्ष में एक निश्चित समय में मद में आती हैं। भैंसें अक्सर अगस्त सितम्बर व अक्टूबर माह में ब्याती हैं। इसलिये यह सर्दियों में अधिक दूध देती है और गर्मी के दिनों अप्रेल से जुलाई में दूध में गिरावट आ जाती है और इन दिनों दूध काफी महंगा मिलता है। अतः गर्मी में दूध की कीमत से फायदा उठाने तथा दुग्ध का उत्पादन बराबर रखने के लिये भैसों के प्रजनन को नियमित करना होगा।

गर्मी का असर:-

गर्मी का असर वैसे तो सभी पशुओं पर होता है लेकिन भैंसों में जल्दी तथा अधिक होता है क्योंकि गर्मी के दिनों में भैंस का दिमाग नियन्त्रित व पूर्ण विकसित नहीं होता है तथा भैंस का रंग काला व बालों की कमी होने के कारण सूरज की गर्मी अधिक असर करती है। गर्मी के दिनों में बांझपन की समस्या भी अधिक रहती है। इस कारण पशुपालकों को अधिक नुकसान उठाना पड़ता है।

गर्मियों में ध्यान रखने वाली बातें:-

- ❖ अप्रेल–जुलाई तक पशु को आरामदायक व स्वच्छ घर में रखें।
- ❖ यदि गर्मी के दिनों में पशु घर में तेज रोशनी आती है तो टाट या बोरी के पर्दे लगा देवें और उनको समय–समय पर पानी से गीला करते रहें ताकि पशुओं को गर्मी से राहत मिले।
- ❖ गर्मी के दिनों में पशु को बाहर चराई के लिये सुबह 9 –10 बजे से पहले तथा शाम को 5–6 बजे के बाद ले जाना चाहिये। जिससे कि पशु को राहत मिलती है और गर्मी महसूस नहीं होती है। दोपहर के समय पशु को चराने के लिये नहीं ले जायें।
- ❖ अधिक गर्मी होने पर पशु घर में पानी का छिडकाव करें तथा खिडकियां व रोशनदान को खुला रखें।
- ❖ गर्मी के दिनों में पशु को ताजा व स्वच्छ जल दिन में तीन से चार बार पिलाना चाहिये। जिससे कि दुधारू पशु के दुग्ध में बढोतरी व उनके शरीर कि कार्य क्षमता बनी रहे।

- ❖ गर्मी के दिनों में पशु के शरीर पर दो तीन बाल्टी पानी शरीर पर सुबह व दोपहर तथा शाम को अवश्य डालें। इससे पशु को गर्मी से राहत मिलती है।
- ❖ पशु को भीषण गर्मी के कारण होने वाले उष्म घात व आपातधात जैसे रोगों से बचाएं व तुरन्त (सही समय) पशुचिकित्सक को बुलायें।

गाय व भैंसों को गर्मियों में हीट स्ट्रेस से बचाने के उपाय :-

- ♦ गर्मियों में हरी घास या चारे की कमी हो जाती है, इसलिये पशुओं को संरक्षित किया हुआ चारा (जैसे हे व साईलेज) खिलाना चाहिये।
- ♦ पशु को स्ट्रेस में आने की वजह से उन्हें सामान्य से अधिक ऊर्जा की जरूरत पड़ती है इसलिये हमें पशु को अधिक ऊर्जा जनित आहार (मक्का व बाजरा आदि) खिलाना चाहिये।
- ♦ गर्मियों में पशु शरीर में पानी के साथ – साथ खनिज लवणों की भी कमी होती है इसलिये इनकी पूर्ति हेतु खनिज मिश्रण बड़े पशु को 30–40 ग्राम की मात्रा में देना चाहिये।
- ♦ पानी की ठाण को नियमित रूप से साफ करना चाहिये तथा भरपूर पानी देना चाहिये।
- ♦ गर्मी के दिनों में पशु को 40–50 ग्राम नमक प्रतिदिन चारे के साथ देना चाहिये।
- ♦ पशुओं को समय–समय पर कृमिनाशक दवा से डिवर्मिंग करानी चाहिये।
- ♦ पशुओं को समय–समय पर टीकाकरण आवश्यक रूप से करना चाहिये जिससे कि गाय व भैंसों में खुरपका व मुहंपका, गलघोटू, ब्रेसेलोसिस तथा एन्थ्रेक्स रोगों से बचाया जा सके।
- ♦ पशु घर हवादार होना चाहिये ताकि गर्म गैसों का जमाव ना हो सके और पशु को सांस लेने की समस्या न हो।
- ♦ गर्मियों में पशु घर में पंखों की व्यवस्था होनी चाहिये।
- ♦ वेलोविंग टैंक में पशुओं को दिन में तेज गर्मी में तैरने के लिये छोड़ना चाहिये जिससे की पशुओं को गर्मी से राहत मिलती है व पशुओं कि प्रजनन क्षमता भी बढती है और पशु सही समय पर हीट में आता है व इसका दुग्ध उत्पादन पर भी अच्छा प्रभाव पडता है।

डॉ. मुकेश चन्द शर्मा, (9414621094) एवं डॉ. आर.के.नागदा
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां-वल्लभनगर

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसधान केन्द्र कुम्हेर (भरतपुर)

स्थानीय शोध एवं वैज्ञानिक तकनीक द्वारा पशुपालन हेतु प्रसार कार्यों के लिए राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय प्रत्येक जिले में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र की स्थापना कर रहा है। इसी क्रम में भरतपुर जिले का वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर में खोला गया है। केन्द्र के लिए भवन का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है । इस भवन में व्याख्यान कक्ष, प्रयोगशाला, कम्प्यूटर युक्त कार्यालय व मीटिंग हॉल है। केन्द्र भविष्य में प्रयोगशाला में रक्त, दूध एवं पशु आहार गुणवत्ता की जांचें कर सकेगा। वर्तमान में एक सहायक प्राध्यापक, एक टीचिंग एसोसियेट एवं एक तकनीकी सहायक सहित दो सहायक कार्मिक कार्यरत हैं। केन्द्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य सभी छोटे–बड़े व दूर–दराज के गांवों तक पशुपालन की उन्नत तकनीक पहुंचाना, परामर्श सेवाएं प्रदान करना, स्थानीय पशुपालन सम्बन्धित समस्याओं का निराकरण करना एवं वैज्ञानिक पशु प्रबंधन को बढ़ावा देकर पशुपालकों की आय बढ़ाना है। यह केन्द्र ने अब तक भरतपुर जिले के 50 गांवों के 2163 पशुपालकों का बेसलाईन सर्वे किया है जिसका मुख्य उद्देश्य जिले में पशुपालन की वर्तमान स्थिति एवं स्थानीय समस्याओं को जानना एवं पशुपालकों का डाटाबेस तैयार करना है। इस केन्द्र ने अब तक 48 पशुपालक प्रशिक्षण शिविर, गोष्ठी व तकनीक प्रदर्शन के माध्यम से 1364 कृषकों एवं पशुपालकों को लाभान्वित किया है। ''मेरा गांव मेरा गौरव'' योजनान्तर्गत नंगला मेथना गांव को गोद लेकर ग्रामवासियों को पशु नस्ल सुधार, उन्नत पशुपालन, पशुपोषण एवं नवीन तकनीकों की जानकारियां समय–समय पर उपलब्ध करवाता है। केन्द्र परिसर में व परिसर के बाहर गांवों में प्रशिक्षण शिविर आयोजित करके पशुओं में आहार प्रबंधन, पशु नस्ल सुधार, पशु स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का समाधान व डेयरी प्रबंधन आदि विषयों पर उन्नत तकनीक की जानकारी व्याख्यान, विधि प्रदर्शन (साइलेज बनाना, अजोला उत्पादन), वैज्ञानिक साहित्य व पत्रिका वितरण के माध्यम से उपलब्ध कराता है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मई, 2016

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
खुरपका–मुँहपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, दौसा, बाँसवाड़ा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनू, अनूपगढ़, सवाई–माधोपुर, धौलपुर, चूरू, अजमेर, बीकानेर
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, जयपुर
गलघोंटू	गाय, भैंस	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, बून्दी, राजसमन्द, पाली, टोंक, उदयपुर, झुंझुनूं, सीकर, हनुमानगढ़
ठप्पा रोग	गाय, भैंस	अनूपगढ़, जयपुर, जैसलमेर, चित्तौडगढ़, राजसमन्द, बीकानेर
बोचुलिज्म	गाय	बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर
न्यूमोनिक पास्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	अलवर, टोंक, जालोर, जयपुर, सीकर, बीकानेर, हनुमानगढ़
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, धौलपुर, भीलवाड़ा कोटा, बारां
सर्रा रोग	भैंस, ऊँट, गाय	धौलपुर, बाँसवाड़ा, हनुमानगढ़, बून्दी, अनूपगढ़, भरतपुर, सीकर
अन्तः परजीवी– गोल– कृमि, पर्ण–कृमि	गाय, भैंस, भेड़, बकरी,	बून्दी, चित्तौडगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, बीकानेर, कोटा, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ
खुजली	ऊँट, भेड़, बकरी	झुंझुनूं, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, टोंक, जयपुर, अलवर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्सीयस ब्रोंकाईटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
तापघात व निर्जलीकरण	सभी पशु–पक्षी	समस्त राजस्थान

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर। फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

गर्मियों में पशु–पक्षियों के स्वास्थ्य की देखभाल कैसे करें

गर्मी का मौसम शुरू होने के साथ ही पशुओं में चारे–पानी की कमी से विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य समस्या उत्पन्न होना शुरू हो जाती है। इस वर्ष सामान्य से अधिक तापक्रम होने की वजह से राज्य भर में पीने के पानी की अत्याधिक कमी होना शुरू हो गयी है। पानी की कमी से पशुओं के स्वास्थ्य पर विपरीत असर देखने में आ रहा है। तालाब, जोहड़ लगभग सूख रहे हैं और पशुओं में निर्जलीकरण की समस्या बढ़ रही है। इस मौसम में हरे चारे की उपलब्धता में कमी होने की वजह से पशु पोषण में भी गिरावट से पशु कमजोर हो जाते हैं व उनके उत्पादन में भारी गिरावट होती है। गर्मियों के मौसम में गर्म हवा और लू से प्रभावित पशु तापघात से ग्रसित हो जाते हैं, जिससे उत्पादन कमी के अतिरिक्त मृत्यु होना भी सामान्य बात है। गर्मियों के मौसम में चारे–पानी की कमी के साथ ही पशु शरीर में लवणों की भारी कमी हो जाती है जिसकी वजह से मुख्य रूप से दुधारू पशु पाईका नामक रोग से ग्रसित हो जाते हैं। पाईका ग्रसित पशु अखाद्य वस्तु जैसे लकड़ी, चमड़ा, कागज, पत्थर, चूना, हड्डी अथवा मृत पशु के अवयव खाने व चबाने लगते हैं। इस मौसम में जमीन में रहने वाले जीवाणु (क्लोस्ट्रीडियम बॉटूलिनम) हड्डी–मांस व अन्य अवयवों में रहकर एक बहुत ही विषैला जहर बनाते हैं। यदि पाईका ग्रस्त पशु ऐसे विषैले हड्डी, चमडा अथवा अन्य अवयवों को खाता है तो बॉटूलिज्म नामक विषाक्तता से प्रभावित हो जाता है। यह बॉटूलिज्म नामक रोग इन दिनों उत्तरी–पश्चिमी राजस्थान में पशुओं को अत्याधिक रूप से प्रभावित कर रहा है। यह रोग पशुओं में जानलेवा साबित होता है। गर्मियों के समय में मुर्गियों में तापघात व निर्जलीकरण एक बहुत बड़ी समस्या है जिसमें मुर्गीपालकों को अत्यधिक मृत्यु दर होने के कारण काफी आर्थिक हानि उठानी पडती है।

पशुपालक भाईयों को इस अत्यधिक गर्मी में कुछ बातों पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये जैसे– पशुओं को छायादार स्थान पर बांधे व पीने के लिए स्वच्छ व ठंडा पानी उपलब्ध करायें। यदि पानी उपलब्ध हो तो विशेषकर भैंसों को दिन में कम से कम एक बार नहलाने का प्रबंध करें। पशुओं को लवण–मिश्रण की समुचित मात्रा उपलब्ध करायें, ताकि पशु पाईका ग्रस्त होने से बचें और उन्हें बॉटूलिज्म होने से भी बचाया जा सके। पहले से संरक्षित चारे का सही उपयोग करें व मुर्गीघर में ठंड रखने के लिए खिड़कियों में गीली पल्ली लगायें व हवा का आदान–प्रदान सुनिश्चित करें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

सफलता की कहानी

खेती के साथ पशुपालन द्वारा अतिरिक्त आय प्राप्त कर आर्थिक आत्मनिर्भर हुए सोचन्द गुर्जर

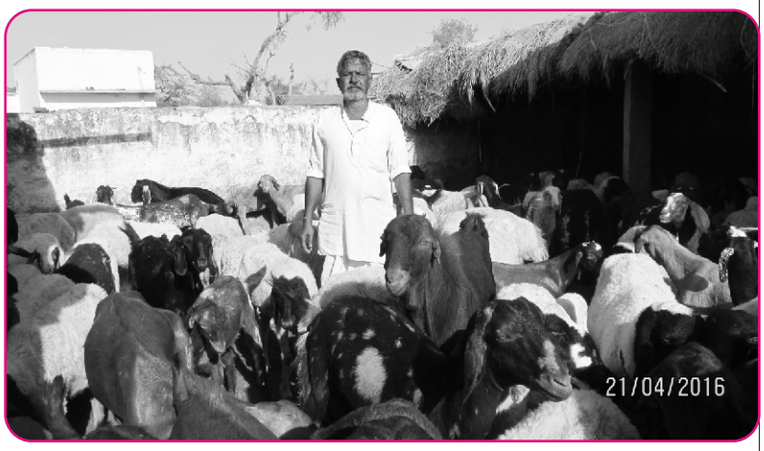

कृषि और पशुपालन के उचित सामंजस्य से किसान व पशुपालक अच्छी आजीविका प्राप्त कर अपने परिवार का उचित पालन–पोषण कर समृद्ध जीवन सुनिश्चित कर सकते हैं। ऐसी ही सूझबूझ का परिचय दिया लाड़नूं तहसील के दुजार गांव के पशुपालक श्री सोचन्द गुर्जर ने, जिन्होंने पशुपालन से विशेष रूप से भेड़–बकरी पालन के द्वारा अपने आप को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया। अशिक्षित होने के बावजूद पारम्परिक कृषि के साथ पशुपालन को अपनाकर सोचन्द गुर्जर ने दूरदर्शिता का परिचय दिया। सोचन्द गुर्जर ने अपने पिता भगवानाराम गुर्जर की 6 बीघा जमीन पर खेती के साथ बकरी व भेड़ पालन का व्यवसाय आरम्भ किया। वर्तमान में इनके पास 100 भेड़ें, 3 मेंढ़े व 25 मेमने हैं। इनके पास 35 बकरियां, 30 बकरे व 25 मेमने भी हैं। यही नहीं, आर्थिक रूप से सक्षम होने पर इन्होंने गाय व भैंस पालन भी शुरू किया है। वर्तमान में इनके पास 4 गाय, 3 बछिया व एक भैंस भी है। गाय–भैंस का दूध बेचकर तथा गोबर विक्रय कर आय अर्जित करते हैं। प्रत्येक चार माह में भेड़ों की ऊन भी बेचते हैं। 30–40 रू. प्रति किलो के भाव से करीब 100–150 किग्रा ऊन बेचकर आय प्राप्त करते हैं। बकरा बेचकर प्रति बकरे के से 10,000 से 11,000 रू. की आय प्राप्त करते हैं। खेती से उत्पन्न चारा लूंग, आदि को पशुओं को खिलाते हैं। इस प्रकार पशुपालन से 1,00,000/–रू प्रतिवर्ष की अतिरिक्त आय प्राप्त करते हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुंसधान केन्द्र, बाकलिया– लाड़नू (नागौर) द्वारा मेरा गांव मेरा गौरव योजना के अन्तर्गत दुजार गांव का चयन किया गया है। केन्द्र प्रभारी डॉ. कमल पुरोहित श्री सोचन्द गुर्जर को समय–समय पर उचित परामर्श एवं आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं। पशु टीकाकरण व अजोला संवर्द्धन जैसी तकनीकों से सोचन्द गुर्जर बहुत प्रभावित हुए हैं। वे वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया से निरंतर सम्पर्क में रहते हैं। इनके इस कार्य से अन्य पशुपालक भी प्रेरित होते हैं।

सम्पर्क– श्री सोचन्द गुर्जर, दुजार, लाडनूं (मो.7665629993)

मुर्गीपालन में औषधीय पौधों से परम्परागत देशी उपचार

ग्रामीण पशुपालक आर्थिक तंगी, जंगलों में जड़ी–बूटियों की प्रचुर उपलब्धता तथा जानकारी होने की वजह से महंगी ऐलोपैथिक दवाईयों का इस्तेमाल कम करते हैं। अधिकांश ग्रामीण पशुपालक परम्परागत देशी उपचार पर अधिक विश्वास करते हैं। देशी दवाओं के प्रयोग से उपचार करने पर कोई बुरा असर नहीं होता, खर्च बहुत कम होता है तथा अचूक इलाज होता है। शहरों के आसपास बसने वाले पशुपालक अक्सर अपने पशुओं का उपचार ऐलोपैथिक दवाओं से करते हैं। परन्तु इन दवाओं के अधिक उपयोग से जीवाणु, परजीवी आदि में लम्बे अर्से के बाद रोग प्रतिकारक शक्ति पैदा हो जाती है। इसके कारण मंहगी दवाओं के उपयोग से लाभ होने की अपेक्षा नुकसान अधिक होता है। इसलिए गांवों में परम्परागत देशी उपचार का महत्व बढ़ जाता है। कई जनजातीय पशुपालक विभिन्न औषधीय पौधों का महत्व, गुण एवं दोषों को जानते हैं तथा सूझबूझ से उपयोग करते हैं। काफी समय से देशी जड़ी–बूटियों के परम्परागत ज्ञान को जीवित रखने की आवश्यकता महसूस हो रही है अन्यथा यह ज्ञान पिछली पीढियों के जानकारों के साथ लुप्त हो जाएगा। साथ ही हमें आधुनिक पशुचिकित्सा विज्ञान को भी साथ लेकर चलना है। हमारा प्रयास है कि आधुनिक पशुचिकित्सा विज्ञान एवं पुरातन परम्परागत ज्ञान के बीच एक सेतु स्थापित हो तथा अद्भुत गुणों वाली वनस्पतियों का पशुचिकित्सा में और अधिक प्रयोग हो। गांवों में मुर्गियों का रख–रखाव ठीक से नहीं होने के कारण कुक्कुट पालकों को समुचित लाभ नहीं मिल पाता है। यदि ग्रामीण मुर्गीपालन के प्रबंधन में थोड़ा सुधार लाकर मुर्गी–रोग की रोकथाम की जाए, तो यह मुर्गीपालक की आय में यथोचित बढ़ोतरी कर सकता है। ग्रामीण मुर्गीपालन में मुख्यतः झुमरी रोग, माता–चेचक रोग, सर्दी – खांसी, दस्त रोग अधिक दिखायी देता है। इन रोगों से ग्रसित पक्षियों का उपचार स्थानीय गांवों में न हो पाने के कारण मृत्यु दर अधिक होती है। पशु चिकित्सालय और औषधालय गांवों से दूर होने के कारण उपचार सुविधा मुर्गियों को नहीं मिल पाती। ग्रामवासियों को वनग्रामों में उपलब्ध औषधीय पौधों, जड़ी–बूटियों का थोड़ा ज्ञान अवश्य रहता है। यदि इस ज्ञान को समुचित उपयोग कर स्थानीय ग्राम सहयोगकर्ता अथवा गौसेवकों को प्रशिक्षित किया जावे तो ग्रामवासियों को अपने पक्षियों के उपचार हेतु सस्ती एवं सुलभ उपचार सेवा प्राप्त हो सकेगी। इस लेख में मुर्गियों में होने वाली कुछ प्रमुख बीमारियों के लिए औषधीय पौधों के उपयोग की जानकारी दी जा रही है, जिससे ग्रामीण कुक्कुट पालक पक्षियों की मृत्युदर को नियंत्रित कर सके।

सर्दी–खांसी :

ग्रामीण क्षेत्रों में मुर्गियों को सामान्यतः खुला छोड़कर पाला जाता है। ठंड एवं बरसात के मौसम मे पक्षी सर्दी–खांसी रोग से ग्रसित हो जाते हैं। ग्रामों में उपलब्ध हल्दी, लहसून एवं अदरक के पौधों का उपयोग कर रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है।

- ❖ हल्दी अदरक के कंद को पीसकर तैयार रस को पीने के पानी के साथ दिया जाता है।
- ❖ लहसून की पत्तियों को पीसकर दाने के साथ देने से लाभ होता है।
- ❖ प्याज को पीसकर मुर्गियों को खिलाने से भी लाभ होता है।

दस्त रोग :–

ग्रामीण मुर्गियों को खुले में पालने से पक्षी गंदे स्थानों पर जमा पानी को पीते हैं, इसके कारण अनके प्रकार के संक्रमण उनके पेट में जन्म ले लेते हैं जिससे उन्हे कई प्रकार के रोग होने लगते हैं।

- ❖ दस्त रोग से बचाव हेतु मुर्गियों को हमेशा साफ – सुथरा पानी उपलब्ध कराना चाहिये।
- ❖ लहसून की पत्तियाँ एवं हल्दी के कंद को पीसकर दाने के साथ मिलाकर देने से लाभ होता है।
- ❖ इसी प्रकार ब्राऊन शक्कर के घोल में पिसा हुआ हल्दी कंद अच्छी तरह मिलाकर घोल को उबाला जाता है।
- ❖ चावल का पसीया मुर्गियों को दस्त से लाभ दिलाता है।
- ❖ इसी प्रकार गेहूं के चोकर को दाने में मिलाकर देने से मुर्गियों को लाभ मिलता है।

कृमि रोग :–

गंदे स्थानों में रहने के कारण मुर्गियों में कृमि रोग की संभावना बनी रहती है। कृमि अण्डों से संक्रमित पानी अथवा आहार के माध्यम से कृमि अण्डे पक्षियों के पेट में पहुँच जाते हैं, यहां पर नये कृमि बनते हैं। ये कृमि मुर्गी के पेट में उपलब्ध आहार का उपयोग कर अपनी संख्या बढ़ा लेते हैं और मुर्गियों को कमजोर कर देते हैं। पेट के अंदर ही नये कृमि बड़े होकर अण्डे देते हैं, जो कि पक्षियों के मल द्वार के बाहर आकर जमीन एवं जल को पुनः संक्रमित करते हैं। यह क्रम चलता रहता है, जब तक कि पक्षियों को कृमिनाशक दवा न दी जावे।

- ❖ कच्चे पपीते के भीतर उपस्थित रस को पीने के पानी में मिलाकर यदि पक्षियों को दिया जाये तो यह कृमि–नाशक का कार्य करेगा।
- ❖ इसी प्रकार अदरक एवं हल्दी के कंद को पीसकर रस तैयार कर मुर्गियों को पिलाने से फायदा होता है।
- ❖ लहसून की पत्तियों को पीसकर आहार दाने के साथ देने से कृमि रोग से छुटकारा पाया जा सकता है।
- ❖ अनार का रस भी कृमि रोग के रोकथाम में मदद करता है।

फफूंद रोग :–

- ❖ मुर्गियों में फफूंद एवं अन्य संक्रमित रोगों से बचाव के लिए लहसून की पत्तियों को नियमित आहार में मिलाकर दिया जाता है।
- ❖ साथ ही पाने के पानी में पिसा हुआ हल्दी कंद मिलाकर नियमित देने से रोगों से बचाव होता है।

चेचक रोग :–

काली मिर्च के दानों को पीसकर मुर्गियों को खिलाने से चेचक रोक की उग्रता कम होती है। चेचक के फफोले पर भी पीसे हुए काली मिर्च पाउडर को लगाया जाता है। इसी प्रकार पीसा हुआ मिर्च पाउडर दाने में मिलाकर देने से लाभ होता है।

रानीखेत (झुमरी) रोग :–

झुमरी रोग मुर्गियों की अत्यंत घातक बीमारी है। इसका उपचार संभव नहीं है। टीकाकरण से मुर्गियों का बचाव ही एकमात्र उपाय है। मुर्गियों के लक्षण अनुसार सर्दी – खाँसी, दस्त का उपचार कर रोग की तीव्रता को कम किया जा सकता है।

घाव :–

मुर्गियों को खुले में पालने पर कई प्रकार के घाव हो जाते हैं। मुर्गी – लड़ाई के दौरान भी पक्षियों को घाव हो जाता है। कुछ घाव कीड़े से संक्रमित हो जाते हैं, जिनका इलाज कठिन होता है।

- ❖ लहसून की पत्तियों एवं हल्दी कंद को पीसकर बराबर मात्रा में लेकर थोड़ा नारियल तेल मिलाकर लेप (पेस्ट) बनाया जाता है। इसे घाव पर लगाने से लाभ होता है। इसी प्रकार हल्दी कंद को पीसकर तैयार रस को घाव भरने से मदद करता है।
- ❖ नीम पत्तियों को पीसकर तैयार लेप (पेस्ट) लगाने से घाव से कीड़े दूर हो जाते हैं।
- ❖ बरगद के पेड़ से प्राप्त दूधिया रस को घाव के भीतर स्थित कीड़े बाहर आ जाते हैं। इसके पश्चात् घाव में हल्दी से तैयार लेप (पेस्ट) लगाने से घाव जल्दी भर जाता है। इसी प्रकार कच्चा सीताफल को पीसकर घाव में लगाने से कीड़े घाव से बाहर आ जाते हैं।

डॉ. अनिल मूलचंदानी, डॉ. मीनाक्षी सरीन एवं डॉ. अमित कुमार पांडे
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

आओ ! विश्व वेटरनरी दिवस पर हम मूल प्राणियों की सेवा का सकंल्प लें

विश्व वेटरनरी दिवस प्रतिवर्ष अप्रेल माह के अंतिम शनिवार को पूरे विश्व में मनाया जाता है। पशुचिकित्सा एवं पशुपालन व्यवसाय से हम सब जुड़े हुए है। मूक और निरीह प्राणियों की सेवा और सद्कर्म भारतीय संस्कृति का मूल आधार रहा है। इस बार विश्व वेटरनरी दिवस पर दी गई थीम बहुत ही महत्वपूर्ण है– ''एक स्वास्थ्य केन्द्रित सतत् शिक्षा''। विश्व वेटरनरी दिवस का उद्देश्य मानव पशु और पर्यावरण स्वास्थ्य को जलवायु परिवर्तन के अनुकूल बनाए रखना है। इस कार्य में पशुचिकित्सा व्यवसाय से जुड़े सभी लोग और पशुपालक समुदाय की महत्ती जिम्मेदारी है। वर्तमान परिवेश में मानव और पशुचिकित्सा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में चुनौतियां और उभरती बीमारियों की रोकथाम जरूरी है। मनुष्य, पशु और पर्यावरण को एक इकाई मानकर कार्य करने की जरूरत पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत ने भी जोर दिया है। पूरे विश्व में भी इस ओर चिंतन हो रहा है। पशुधन का स्वास्थ्य और खाद्य जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्यावरण का चुश्त–दुरस्त होना जरूरी है। कृषक और पशुपालकों को खेत–खलिहानों में अधिकतम वृक्षारोपण कर हरा–भरा बनाने की जरूरत है। यदि हमारे खेत और खलिहान वनस्पति से भरपूर है तो पशुओं के लिए हरा और पौष्टिक आहार भी सरलता से सुलभ होगा। पशु स्वस्थ और निरोगी रहेंगे। आओ, हम प्रतिज्ञा करें कि मानव और पशु के कल्याण के साथ–साथ पर्यावरण की सुरक्षा के लिए हम सब सदैव तत्पर रहेंगे। **प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक (मो. 9414283388)**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **मई, 2016** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	डॉ. सन्दीप धौलपुरिया 9950733800 पशु प्रसूति एवं मादा रोग विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशुओं में प्रसव के समय रखने वाली सावधानी	05.05.2016
2	डॉ. राजकुमार बेरवाल 9414482918 पशुधन उत्पाद तकनीकी विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	स्वच्छ दूध सग्रंहण एवं पाश्चुरीकरण	12.05.2016
3	डॉ. अनिल आहुजा 9414230453 निदेशक क्लीनिक, राजुवास, बीकानेर	पशुओं में हिड़काव रोग व उससे बचाव	19.05.2016
4	डॉ. अमिता रंजन 9462471644 पशु भैषज एवं विष विज्ञान विभाग,सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशुओं में वनस्पति विषाक्तता : उपचार एवं बचाव	26.05.2016

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : मई, 2016

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया